Yaade Ramzan Qist 2 (Hindi)

तहरीराते अमीरे अहले सुन्नत सिल्सिला (किस्त : 4)

हफ़्तावार रिसाला : 341
Weekly Booklet : 341

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दावते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के क़लम से रमज़ानुल मुबारक 2023 की पुरकैफ़ यादों का तस्वीरी एल्बम

यादे रमज़ान

(क़िस्त : 2)

सफ़हात 30

पेशकश :
मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या
(दावते इस्लामी)

نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّیْ وَنُسَلِّمُ عَلٰی خَاتَمِ النَّبِیّٖن

पहले इसे पढ़ें

बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ عَلَيْهِم के बारे में किताबों में लिखा है कि वोह इबादतों, रियाज़तों, रह़मतों और बरकतों वाले महीने "**रमज़ानुल मुबारक**" का छे माह पहले ही से इन्तिज़ार करते रहते, ऐसे ही अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद इल्यास अ़त़्त़ार क़ादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَکَاتُهُمُ الْعَالِيَه रमज़ानुल मुबारक से सिह़्ह़तो आ़फ़ियत के साथ मिलने की दुआ़ : "**اَللّٰهُمَّ بَلِّغْنَا رَمَضَانَ بِصِحَّةٍ وَّعَافِيَةٍ** या'नी **ऐ अल्लाह पाक ! हमें ख़ैरो आ़फ़ियत से माहे रमज़ान से मिला**" मांगते रहते हैं। आ़शिक़ाने रसूल की दीनी तह़रीक दा'वते इस्लामी की मजलिस अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या के "**शो'बा हफ़्तावार रिसाला**" ने पिछले साल अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُهُمُ الْعَالِيَه की माहे रमज़ानुल मुबारक की मुख़्तलिफ़ तह़रीरात का मज्मूआ़ बनाम "**यादे रमज़ान**" जारी किया था, اَلْحَمْدُ لِلّٰه ! अब उस की दूसरी क़िस्त़ पिछले (या'नी 1444 हि.) माहे रमज़ान के बा बरकत अय्याम की यादों पर मुश्तमिल बनाम "**यादे रमज़ान क़िस्त़ 2**" प्रिन्ट हो कर आप के हाथों में है। अमीरे अहले सुन्नत रोज़ाना एक मदनी फूल : ह़दीसे पाक/किसी बुज़ुर्ग का फ़रमान या कोई क़ौल लिख कर एक इस्लामी भाई को इनायत फ़रमाते थे। اَلْحَمْدُ لِلّٰه ! यूं पूरे माहे रमज़ान की याद ब सूरते तह़रीर मह़फ़ूज़ हो गई। पहली क़िस्त़ की त़रह़ इस क़िस्त़ में भी येह ह़सीन अन्दाज़ अपनाया गया है कि जो माहे रमज़ान की तारीख़ है वोही सफ़ह़ा नम्बर है और जो सफ़ह़ा नम्बर है वोही उस दिन की तारीख़ है। बा'ज़ तह़रीरात में क़दरे तरमीम है अलबत्ता सब मदनी फूल पहली क़िस्त़ से मुख़्तलिफ़ हैं। **अल्लाह** करीम इस किताब को अपनी बारगाह में क़बूलिय्यत अ़त़ा फ़रमा कर कर हमारे लिये बे ह़िसाब बख़्शिश का ज़रीआ़ बनाए। اٰمِين بِجَاهِ خَاتَمِ النَّبِيّٖن صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या

(शो'बा हफ़्तावार रिसाला मुत़ालआ़)

آ گیا آگیا ماہِ رمضان
واہ! کیا بات ماہِ رمضان کی

یادِ رمضان

پیارے آقا صلی اللہ علیہ والہٖ وسلم جب رمضان شریف آتا تو یہ دعا پڑھتے :

اَللّٰھُمَّ سَلِّمْنِیْ مِنْ رَمَضَانَ
وَسَلِّمْ رَمَضَانَ لِیْ وَسَلِّمْهُ مِنِّیْ -

ترجمہ: اے اللہ! مجھے رمضان المبارک میں سلامت رکھ اور رمضان شریف کو میرے لئے سلامتی والا بنا اور اسے مجھ پر سلامتی کے ساتھ گزار-

आया आ गया माहे रमज़ां
वाह ! क्या बात माहे रमज़ां की

यादे रमज़ान

प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जब रमज़ान शरीफ़ आता तो येह दुआ पढ़ते :

اَللّٰھُمَّ سَلِّمْنِیْ مِنْ رَمَضَانَ
وَسَلِّمْ رَمَضَانَ لِیْ وَسَلِّمْهُ مِنِّیْ -

तरजमा : ऐ **अल्लाह** ! मुझे रमज़ानुल मुबारक में सलामत रख और रमज़ान शरीफ़ को मेरे लिये सलामती वाला बना और इसे मुझ पर सलामती के साथ गुज़ार।

رمضان المبارک ۱۴۴۴ھ
23-3-23

صلوا علی الحبیب
صلی اللہ علیٰ محمد

بھوک پیاس برداشت کرنا اور راتوں کو جاگنا آسان ہے مگر **"بُرے اَخلاق"** کا علاج بہت مُشکِل ہے۔ (غُنیۃ الطّالبین (اردو) ص 687)

محمد الیاس قادری
۲ رمضان المبارک ۱۴۴۴ھ
23-3-23

جھوم جاؤ گناہ گارو اب، بخشِ دیگا کرم سے پیارا رب
مرحبا! آگیا مہِ غُفراں، واہ! کیا بات ماہِ رمضاں کی

भूक प्यास बरदाश्त करना और रातों को जागना आसान है मगर "**बुरे अख़्लाक़**" का इलाज बहुत मुश्किल है।

(गुन्यतुत्तालिबीन (उर्दू), स. 687)

झूम जाओ गुनाहगारो अब, बख़्श देगा करम से प्यारा रब
मरहबा ! आ गया महे ग़ुफ़रां, वाह ! क्या बात माहे रमज़ां की

وُضو کے بعد داڑھی میں کنگھی کرنا فقیری (یعنی غُربت) کو دُور کرتا ہے ۔

(مراٰۃ 6/163 - اَشِعّۃُ اللّمعات)

याद रमज़ान

वुज़ू के बा'द दाढ़ी में कंघी करना फ़क़ीरी (या'नी ग़ुर्बत) को दूर करता है ।

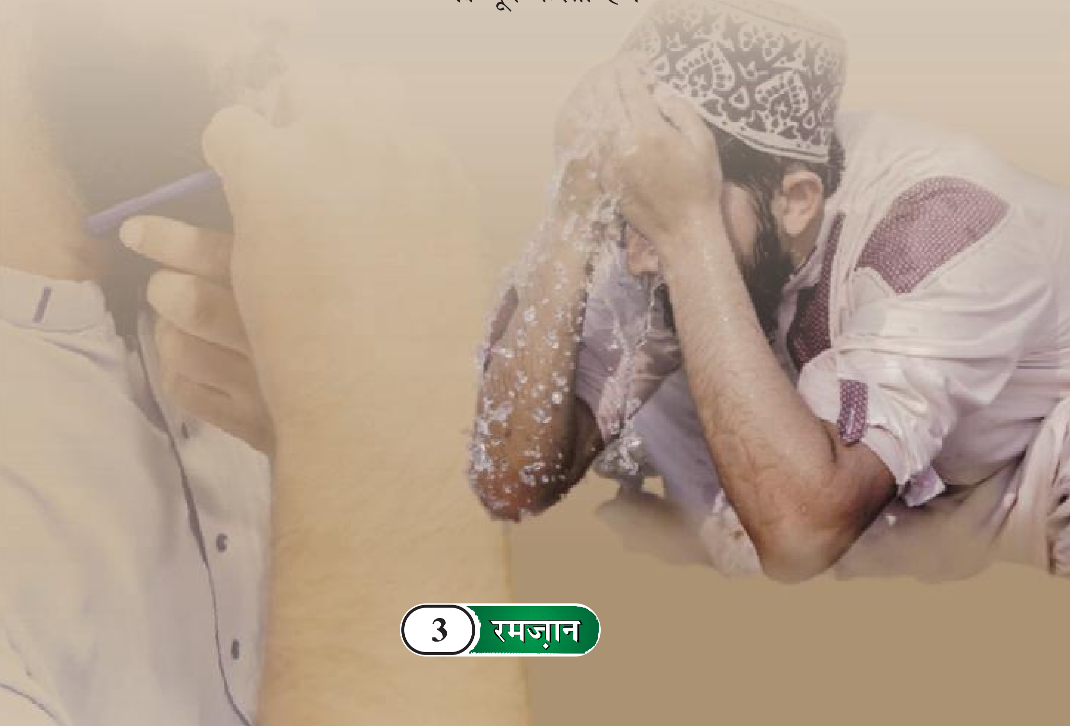

قرض کا نقصان

مدینہ

فرمانِ مصطفیٰ صلی اللہ علیہ والہٖ وسلم: ''قرض دین کا عیب ہے۔'' (تاریخِ دمشق لابن عساکر ج 67 ص 523)

بزرگانِ دین رحمہم اللہ المبین فرماتے ہیں: قرض کا ٹینشن عقل کو خراب کردیتا ہے۔ (مراٰۃ ج 4 بالتصرّف)

واہ! کیا بات ماہِ رمضان کی

यादे रमज़ान

क़र्ज़ का नुक़्सान

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : "क़र्ज़ दीन का ऐब है।"

बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللهُ الْمُبِيْن फ़रमाते हैं : क़र्ज़ का टेन्शन अक़्ल को ख़राब कर देता है। (मिरआत, जि. 4 बित्तसर्रुफ़)

वाह ! क्या बात माहे रमज़ां की

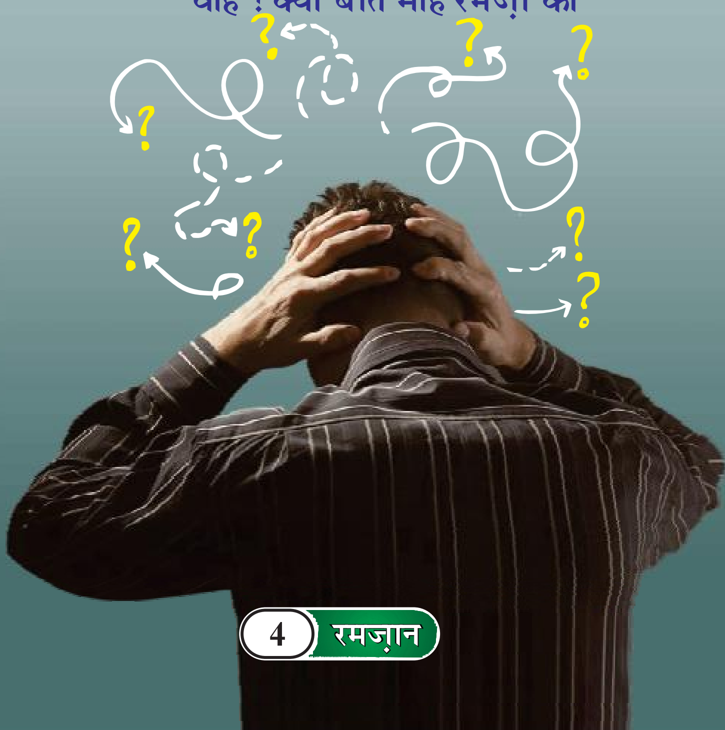

اللہ

یادِ رمضان

حضرت رَبیع بن خُثَیم رحمۃ اللہ علیہ نے اپنے شاگردوں سے پوچھا: کیا تم جانتے ہو کہ بیماری، دَوا و شِفا کیا ہے؟ عرض کی: نہیں معلوم۔ فرمایا: "بیماری گناہ، دَوا توبہ و استغفار اور شِفا یہ ہے کہ گناہ سے ایسی پکّی توبہ کرو کہ پھر اس کی طرف نہ لَوٹو۔" (الزھد للامام احمد، زھد محمد بن سیرین ص ۳۲۹، رقم ۱۹۸۳)

باغِ جنّت خدا سے پائے گا، نارِ دوزخ میں وہ نہ جائے گا
جو بھی ہے عاشقِ ماہِ رمضان، واہ! کیا بات ماہِ رمضان کی

यादे रमज़ान

ह़ज़रते रबीअ़ बिन ख़ुसैम رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने अपने शागिर्दों से पूछा : क्या तुम जानते हो कि बीमारी, दवा व शिफ़ा क्या है? अ़र्ज़ की : नहीं मा'लूम । फ़रमाया : "बीमारी गुनाह, दवा तौबा व इस्तिग़फ़ार और शिफ़ा येह है कि गुनाह से ऐसी पक्की तौबा करो कि फिर उस की त़रफ़ न लौटो।"

बागे़ जन्नत ख़ुदा से पाएगा, नारे दोज़ख़ में वोह न जाएगा
जो भी है आ़शिक़े महे रमज़ां, वाह ! क्या बात माहे रमज़ां की

یادِ رمضان

الحمدللہ الکریم آج رمضان الکریم کی چھٹی رات کے تقریباً پونے دو بجے ہیں مدنی مذاکرے سے فارغ ہو چکا ہوں، آج یہ حدیثِ پاک بھی بیان کی ہے:

فرمانِ مصطفےٰ صلی اللہ علیہ والہ وسلم:

"مالدار کا قرض کی ادائیگی میں ٹال مٹول کرنا ظلم ہے۔" (بخاری، 2/109، حدیث: 2400)

یا خدا! ہم عاصیوں پر یہ بڑا احسان ہے
زندگی میں پھر عطا ہم کو کیا رمضان ہے

यादे रमज़ान

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ الْکَرِیْم आज रमज़ानुल करीम की छटी रात के तक़रीबन पौने दो बजे हैं, मदनी मुज़ाकरे से फ़ारिग़ हो चुका हूं, आज येह ह़दीसे पाक भी बयान की है :

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم :

"मालदार का क़र्ज़ की अदाएगी में टालम टोल करना ज़ुल्म है।"

या ख़ुदा हम आ़सियों पर येह बड़ा एह़सान है
ज़िन्दगी में फिर अ़ता हम को किया रमज़ान है

اللّٰہ

یادِ رمضان

دُعائے اِفطار کی فضیلت

فرمانِ آخری نبی صلَّی اللّٰہُ علیہ واٰلہٖ وسلّم : اے علی! جب تم رمضان کے مہینے میں روزہ رکھو تو افطار کے بعد یہ دعا پڑھو:

اَللّٰھُمَّ لَکَ صُمْتُ وَعَلَیْکَ تَوَکَّلْتُ وَعَلٰی رِزْقِکَ اَفْطَرْتُ[1] تو تمھارے لیے تمام روزے داروں کی مثل اجر لکھا جائیگا اور ان کے ثواب میں بھی کمی نہیں کی جائیگی۔

[1] ترجمہ: اے اللّٰہ پاک! میں نے تیرے لئے روزہ رکھا اور تجھی پر بھروسا کیا اور تیرے ہی عطا کئے ہوئے رزق سے اِفطار کیا۔

यादे रमज़ान

दुआए इफ़्तार की फ़ज़ीलत

फ़रमाने आख़िरी नबी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **:**

ऐ अ़ली ! जब तुम रमज़ान के महीने में रोज़ा रखो तो **इफ़्तार के बा'द** येह दुआ पढ़ो : اَللّٰھُمَّ لَکَ صُمْتُ وَعَلَیْکَ تَوَکَّلْتُ وَعَلٰی رِزْقِکَ اَفْطَرْتُ[1] तो तुम्हारे लिये तमाम रोजे़दारों की मिस्ल अज्र लिखा जाएगा और उन के सवाब में भी कमी नहीं की जाएगी।

1 : तरजमा : ऐ **अल्लाह** पाक ! मैं ने तेरे लिये रोज़ा रखा और तुझी पर भरोसा किया और तेरे ही अ़ता किये हुए रिज़्क़ से इफ़्तार किया।

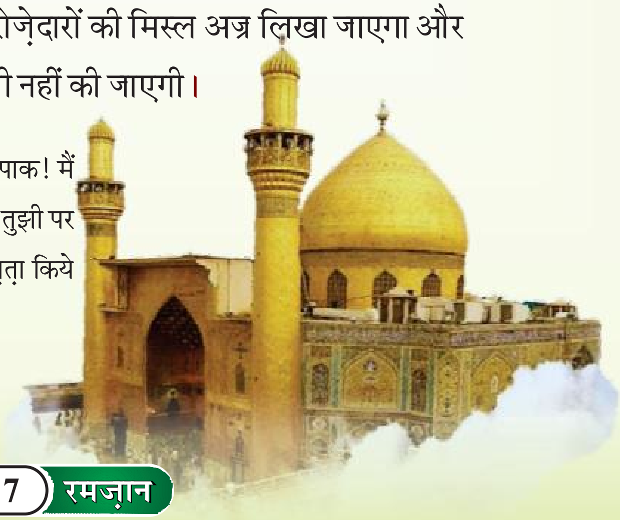

مُتّقی کون؟

حضرتِ بکر بن عبدُ اللہ مُزَنی رحمۃ اللہ علیہ فرماتے ہیں:

کوئی شخص اُس وقت تک مُتّقی (یعنی پرہیزگار) نہیں ہوسکتا جب تک وہ **غُصّے** اور **لالچ** سے نہ بچے۔

(مصنّف ابنِ ابی شیبہ ج8 ص285)

صلّوا علی الحبیب صلّی اللہُ علٰی محمّد

मुत्तक़ी कौन ?

ह़ज़रते बक्र बिन अ़ब्दुल्लाह मुज़नी رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ फ़रमाते हैं :

कोई शख़्स उस वक़्त तक मुत्तक़ी (या'नी परहेज़ गार) नहीं हो सकता जब तक वोह **ग़ुस्से** और **लालच** से न बचे।

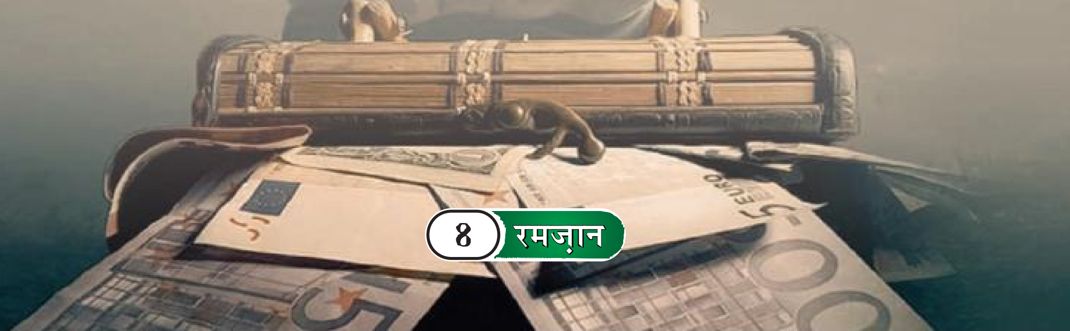

मज़ारे हज़रत इमाम शाफ़ेई رَحۡمَةُ اللّٰهِ عَلَيۡه

مزارِ حضرت امام شافعی رحمۃ اللہ علیہ

غم کم کرنے کا نسخہ

ارشادِ امام شافعی رحمۃ اللہ علیہ

جو اپنا لباس صاف رکھے اُس کے **غم** کم ہو جائیں گے اور جو خوشبو لگائے اُس کی **عقل** بڑھے گی۔ (احیاء العلوم ج ۱ ص ۱۷۱)

رمضان الکریم کا دوسرا جُمعہ مبارک

ग़म कम करने का नुस्ख़ा

इर्शादे इमाम शाफ़ेई رَحۡمَةُ اللّٰهِ عَلَيۡه

जो अपना लिबास साफ़ रखे उस के **ग़म** कम हो जाएंगे और जो खुश्बू लगाए उस की **अ़क़्ल** बढ़ेगी।

रमज़ानुल करीम का दूसरा **जुमुआ़** मुबारक

SAY "NO" TO APRIL FOOL

فرمانِ آخری نبی صلی اللہ علیہ والہٖ وسلم بڑی خیانت یہ ہے کہ تُو اپنے بھائی سے کوئی بات کرے جس میں وہ تجھے سچا سمجھتا ہو اور تُو اس میں **جھوٹا** ہو۔ (ابوداؤد ۴/۲۹۴۔ حدیث: 4971)

۱: اس میں جھوٹ بھی ہے اور دھوکا بھی۔ (مراٰۃ ج۶، حدیث: 4845)

SAY "NO" TO APRIL FOOL

फ़रमाने आख़िरी नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم**:**

बड़ी ख़ियानत येह है कि तू अपने भाई से कोई बात करे जिस में वोह तुझे सच्चा समझता हो और तू इस में **झूटा** हो।[1]

---

1 : इस में झूट भी है और धोका भी। (मिरआत, जि. 6, ह़दीस : 4845)

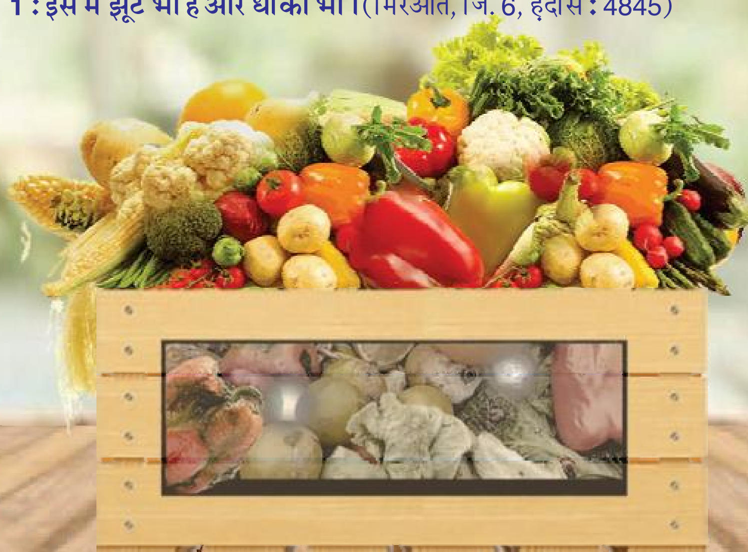

دُرُودِ پاک کی برکتیں

اعلیٰ حضرت رحمۃ اللہ علیہ کے بھائی

مولینا حسن رضا خان حسن رحمۃ اللہ علیہ فرماتے ہیں :

"دُرُود آئینۂ ایمان کی جِلا (یعنی چمک)

(اور) لاعلاج اَمراض کی دوا ہے۔"

(رَسائلِ حسن ص ۱۱۹)

صلوا علی الحبیب صلی اللہ علیٰ محمد

दुरूदे पाक की बरकतें

आ'ला हज़रत رحمۃ اللہ علیہ के भाई मौलाना ह़सन रज़ा ख़ान ह़सन رحمۃ اللہ علیہ फ़रमाते हैं : "**दुरूद** आईनए ईमान की जिला (या'नी चमक) (और) ला इलाज अमराज़ की दवा है।" (रसाइले ह़सन, स. 119)

بدگمانی کے گناہ سے بچیئے، یہ دنیا
میں بھی رشتے اور تعلقات **خراب** کرتی ہے،
قوت القلوب میں ہے، حضرت مولا علی رضی اللہ عنہ
فرماتے ہیں: "بدگمانی دوست کو دور
کر دیتی ہے۔"

صلوا علی الحبیب
صلی اللہ علی محمد

बद गुमानी के गुनाह से बचिये, येह दुन्या में भी रिश्ते और तअ़ल्लुक़ात **ख़राब** करती है, **क़ूतुल क़ुलूब** में है, ह़ज़रते मौला अ़ली رَضِیَ اللہُ عَنْہُ फ़रमाते हैं : "बद गुमानी दोस्त को दूर कर देती है।"

یادِ رمضان

جب کوئی مُعافی مانگے تو دل بڑا رکھ کر
مُعاف کر دینا چاہیے کہ ایک فرمانِ آخری نبی صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم
میں یہ بھی ہے: "بندہ کسی کا قُصُور مُعاف
کرے تو اللہ پاک اُس (مُعاف کرنے والے)
کی عزّت ہی بڑھائے گا۔"
(مسلم، حدیث: ۲۵۸۸)

यादे रमज़ान

जब कोई मुआ़फ़ी मांगे तो दिल बड़ा रख कर मुआ़फ़ कर देना चाहिये कि एक फ़रमाने आख़िरी नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم में येह भी है : "बन्दा किसी का कुसूर मुआ़फ़ करे तो **अल्लाह** पाक उस (मुआ़फ़ करने वाले) की इ़ज़्ज़त ही बढ़ाएगा।"

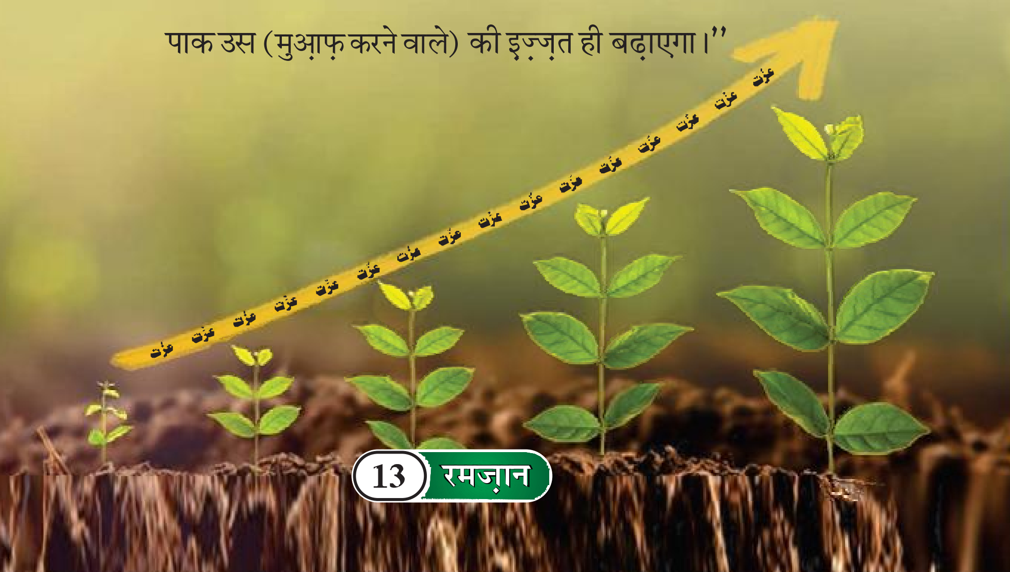

نیکوں کا تذکرہ کرنے کی فضیلت

فرمانِ آخری نبی صلی اللہ علیہ والہ وسلم ذِکْرُ الصّٰلِحِیْنَ کَفَّارَۃٌ۔ یعنی نیک بندوں کا تذکرہ (گناہوں کا) کَفّارہ (یعنی مٹانے والا) ہے۔

(جامعِ صغیر ص 264، حدیث: 4331)

مجھے ماہِ رمضان سے پیار ہے

नेकों का तज़्किरा करने की फ़ज़ीलत

फ़रमाने आख़िरी नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَالِهٖ وَسَلَّم **:**
ذِكْرُ الصّٰلِحِيْنَ كَفَّارَةٌ۔ या'नी नेक बन्दों का तज़्किरा (गुनाहों का) कफ़्फ़ारा (या'नी मिटाने वाला) है।

मुझे माहे रमज़ान से प्यार है

याद रमज़ान

یادِ رمضان

امام حسن رضی اللہ عنہ کا جشنِ ولادت مبارک (15 رمضان یومِ ولادت)

مدینہ

فرمانِ امام حسن رضی اللہ عنہ

"بے شک سب سے بڑی عقلمندی پرہیزگاری اور سب سے بڑی بے وقوفی گناہ و بے حیائی ہے۔"

इमामे ह़सन رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ का जश्ने विलादत मुबारक

(15 रमज़ान यौमे विलादत)

مدینہ

फ़रमाने इमामे ह़सन رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ **:**

"बेशक सब से बड़ी अ़क़्लमन्दी परहेज़ गारी और सब से बड़ी बे वुक़ूफ़ी गुनाह व बे ह़याई है।"

मज़ारे ह़ज़रत इमामे ह़सन رضی اللہ عنہ

مزارِ حضرت امام حسن رضی اللہ عنہ

यादे रमज़ान

یادِ رمضان

”اپنی **واہ وا** چاہنا دُنیا و آخرت
دونوں کیلئے تباہ کُن ہے۔“

“अपनी **वाह वा** चाहना दुन्या व आख़िरत
दोनों के लिये तबाह कुन है।”

فرمانِ بی بی عائشہ

"جب کوئی بندہ گناہ پر شرمندہ ہوتا ہے تو اس سے پہلے کہ وہ توبہ کرے اللہ پاک اُسے بخشش دیتا ہے۔"

(الترغیب والترھیب)

یومِ عُرس: 17 رمضان الکریم

फ़रमाने बीबी आ़इशा

"जब कोई बन्दा गुनाह पर शरमिन्दा होता है तो इस से पहले कि वोह तौबा करे **अल्लाह** पाक उसे बख़्श देता है।"

यौमे उ़र्स 17 रमज़ानुल करीम

مزارِ اُمُّ المومنین حضرت عائشہ رضی اللہ عنہا

मज़ारे उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते आ़इशा رضی اللہ عنہا

اپنی عبادت یا اچھی صورت یا دولت
پر اِترانے والے خطا پر ہیں کہ یہ سب چیزیں
اللہ کریم نے عنایت فرمائی ہیں، وہ جب
چاہے واپس لے سکتا ہے۔

अपनी इ़बादत या अच्छी सूरत या दौलत पर इतराने वाले ख़त़ा पर हैं कि येह सब चीज़ें **अल्लाह** करीम ने इ़नायत फ़रमाई हैं, वोह जब चाहे वापस ले सकता है ।

نعت خوانی عمدہ عبادت ہے، نعت خواں کو حبِّ جاہ و مال سے پاک اور با اخلاق و باکردار ہونا چاہیے۔

صلّوا علی الحبیب صلّی اللہ علیٰ محمد

موت آجائے تیرے ذکر کے دوران مجھے
دل سے کہتا ہوں میں آمین رسولِ عربی صلی اللہ علیہ والہ وسلم

ना'त ख़्वानी उ़म्दा इ़बादत है, ना'त ख़्वां को हु़ब्बे जाहो माल से पाक और बा अख़्लाक़ व बा किरदार होना चाहिये।

मौत आ जाए तेरे ज़िक्र के दौरान मुझे
दिल से कहता हूं मैं आमीन रसूले अ़रबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

علم

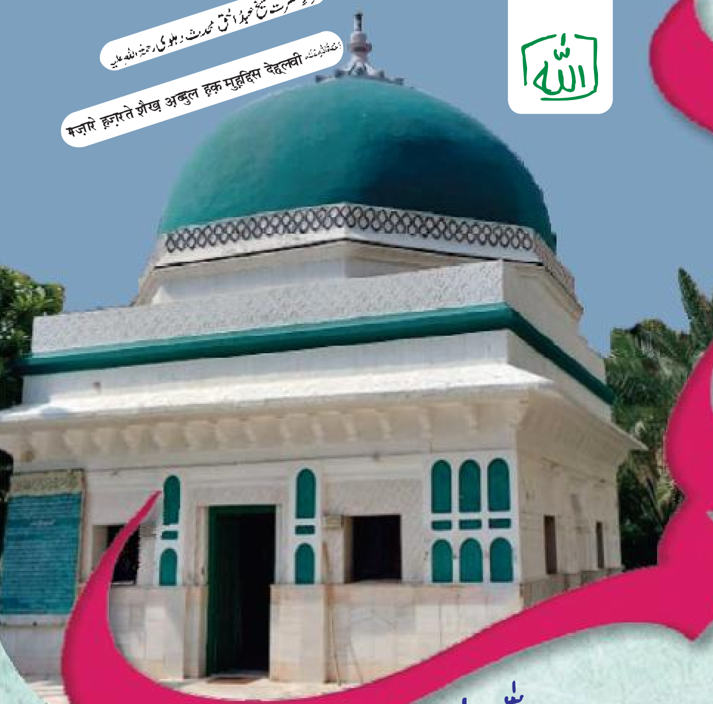

حضرت شیخ عبدالحق محدّث دہلوی رحمۃ اللہ علیہ فرماتے ہیں:

"جس مسلمان میں علمِ دین حاصل کرنے کی حرص اور اس کا شوق ہوگا اُس کا **ایمان پر خاتمہ** ہوگا۔"

(لمعات التنقیح ج۱ ص۵۵۹ تا ۵۶۰)

آہ! الوداع
عشرۂ مغفرت
الوداع

यादे रमज़ान

ह़ज़रते **शैख़ अ़ब्दुल ह़क़ मुह़द्दिस देहलवी** رحمۃ اللہ علیہ फ़रमाते हैं :

"जिस मुसल्मान में इ़ल्मे दीन ह़ासिल करने की ह़िर्स और इस का शौक़ होगा उस का **ईमान पर ख़ातिमा** होगा।"

आह ! अल वदाअ़
अ़शरए मग़्फ़िरत
अल वदाअ़

”بول کر پچھتانے سے نہ بول کر
اور کھا کر پچھتانے سے
نہ کھا کر پچھتانا اچھا“۔

‘‘बोल कर पछताने से न बोल कर और खा कर
पछताने से न खा कर पछताना अच्छा।’’

یادِ رمضان

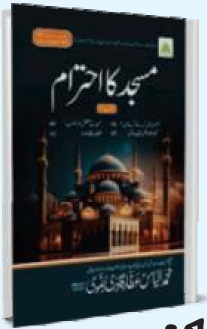

"مسجد میں ہنسنا منع ہے کہ قبر میں تاریکی (یعنی اندھیرا) لاتا ہے، موقع کے لحاظ سے تبسم (یعنی مسکرانے) میں حرج نہیں"

(مسجد کا احترام ص 6)

رمضان کا چوتھا
جمعہ مبارک

''मस्जिद में हंसना मन्अ़ है कि क़ब्र में तारीकी (या'नी अंधेरा) लाता है, मौक़अ़ के लिहाज़ से तबस्सुम (या'नी मुस्कुराने) में ह़रज नहीं।'' (मस्जिद का एह़तिराम, स. 6)

بسم اللہ الرحمٰن الرحیم

الٰہی! رہ گئے رمضاں کے آخری روزے
رہائی نارِ جہنّم سے ہو عطا یاربّ!

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب
صلَّی اللّٰہُ علٰی محمّد

इलाही रह गए रमज़ां के आख़िरी रोज़े
रिहाई नारे जहन्नम से हो अ़ता या रब !

यादे रमज़ान

یادِ رمضان

عربی کہاوت :

مَنْ هُوَ نَاصِحُكَ خَيْرٌ لَّكَ
مِمَّنْ هُوَ مَادِحُكَ

یعنی : تجھے نصیحت کرنے والا تیری تعریف
کرنے والے سے بہتر ہے ۔

الوداع الوداع
آہ ! رمضان

अ़रबी कहावत :

مَنْ هُوَ نَاصِحُكَ خَيْرٌ لَّكَ
مِمَّنْ هُوَ مَادِحُكَ

या'नी : तुझे नसीह़त करने वाला तेरी
ता'रीफ़ करने वाले से बेहतर है ।

अल वदाअ़ अल वदाअ़
आह ! रमज़ां

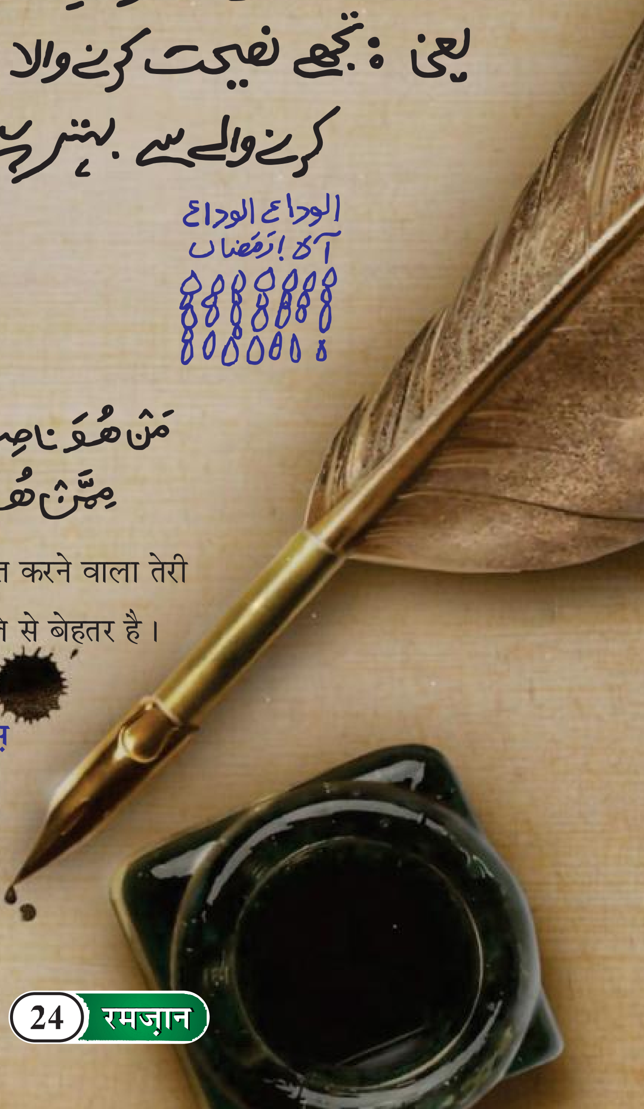

यादे रमज़ान

یادِ رمضان

مزارِ حضرت حسن بصری رحمۃ اللہ علیہ

मज़ारे हज़रते हसन बसरी رحمۃ اللہ علیہ

فرمانِ حضرت حسن بصری رحمۃ اللہ علیہ

عاجزی یہ ہے کہ تُم اپنے گھر سے جب نکلو تو جس مسلمان سے بھی ملو اُسے اپنے سے افضل جانو۔ (الزواجر ج ۱ ص 163)

لیلۃُ القدر آگئی کیا رحمتِ سُبحان ہے
دوستو! رخصت ہوئے دیکھو چلا رمضان ہے

آہ! الوداع ماہِ رمضان

फ़रमाने हज़रते हसन बसरी رحمۃ اللہ علیہ :

आ़जिज़ी येह है कि तुम अपने घर से जब निकलो तो जिस मुसल्मान से भी मिलो उसे अपने से अफ़्ज़ल जानो।

लैलतुल क़द्र आ गई क्या रह़मते सुब्ह़ान है
दोस्तो ! रुख़्सत हुए देखो चला रमज़ान है

आह ! अल वदाअ़
माहे रमज़ान

اللہ

آہ! رمضان
مدینہ

یادِ رمضان
مدینہ

دُنیوی اِمتحان میں نُمایاں کامیابی
پانے والا قابلِ رَشک نہیں،
حقیقت میں قابلِ رشک وُہی ہے
جو جنّت میں داخِلہ پانے میں
کامیاب ہو گیا۔"

ہائے تڑپا کے رمضان چلا ہے

आह ! रमज़ां
मदीना

यादे रमज़ान
मदीना

"दुन्यवी इम्तिहान में नुमायां काम्याबी पाने वाला क़ाबिले रश्क नहीं, हक़ीक़त में क़ाबिले रश्क वोही है जो जन्नत में दाख़िला पाने में काम्याब हो गया है।"

हाए तड़पा के रमज़ां चला है

"انسان جتنا دُنیوی پریشانیوں سے خوفزدہ ہے اُتنا ہی اُخروی پریشانیوں سے بھی ڈرے تو اللہ پاک کی رحمت سے دونوں ہی سے بچ جائے۔"

حسرتا واحسرتا
اے ماہِ رمضان!
الوداع

آہ! رمضان

"इन्सान जितना दुन्यवी परेशानियों से ख़ौफ़ज़दा है उतना ही उख़रवी परेशानियों से भी डरे तो **अल्लाह** पाक की रह़मत से दोनों ही से बच जाए।"

हस्रता वा हस्रता
ऐ माहे रमज़ां !
अल वदाअ़

आह ! रमज़ान

اللہ

اے ماہِ رمضان الوداع

یادِ رمضان

فرمانِ آخری نبی صلی اللہ علیہ والہ وسلم :

"اپنے مقاصد میں کامیابی پانے کیلئے انہیں راز میں رکھنے سے مدد حاصل کرو کیوں کہ دنیا میں ہر نعمت والے سے حسد کیا جاتا ہے۔"

(شعب الایمان 5/277)

بشر رازِ دلی کہہ کر ذلیل و خوار ہوتا ہے
نکل جاتی ہے جب خوشبو تو گل بیکار ہوتا ہے

اے ماہِ رمضان الوداع

यादे रमज़ान

फ़रमाने आख़िरी नबी صلی اللہ علیہ والہ وسلم **:**

ऐ माहे रमज़ां अल वदाअ़

"अपने मक़ासिद में काम्याबी पाने के लिये उन्हें राज़ में रखने से मदद ह़ासिल करो क्यूं कि दुन्या में हर ने'मत वाले से **ह़सद** किया जाता है।"

बशर राज़े दिली कह कर ज़लीलो ख़्वार होता है
निकल जाती है जब ख़ुश्बू तो गुल बेकार होता है

ऐ माहे रमज़ां अल वदाअ़

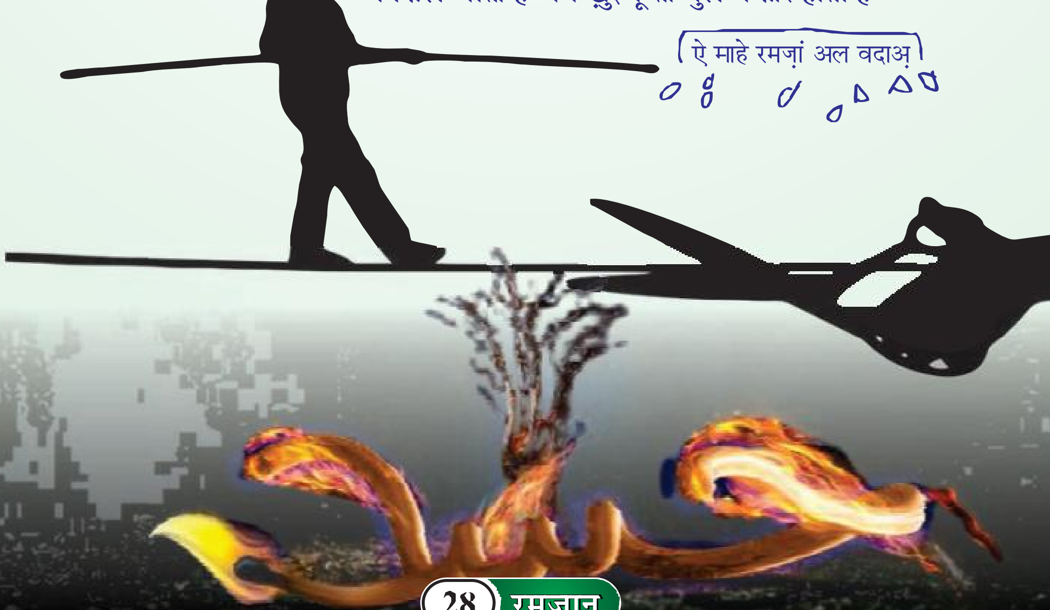

यादे रमज़ान

یادِ رمضان

فرمانِ آخری نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم ہے

" محروم ہے وہ شخص جس نے رمضان کو
پایا اور اس کی مغفرت نہ ہوئی کہ
جب اس کی رمضان میں مغفرت نہ ہوئی
تو پھر کب ہوگی! (معجم اوسط ج ۵ ص ۳۶۶
فیضانِ رمضان ص 208)

صلوا علی الحبیب
صلی اللہ علیٰ محمد

عِلمی نہ کی کچھ بندگی
از بس ہے کہ شرمندگی
واحسرتا واحسرتا
ماہِ مبارک الوداع

फ़रमाने आख़िरी नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **:**

“महरूम है वोह शख़्स जिस ने रमज़ान को पाया और उस की मग़्फ़िरत न हुई कि जब इस की रमज़ान में मग़्फ़िरत न हुई तो फिर कब होगी !”

इल्मी न की कुछ बन्दगी
अज़् बस है कि शरमिन्दगी
वा ह़स्रता वा ह़स्रता
माहे मुबारक अल वदाअ़

الله

جمعۃ الوداع مبارک

الٰہی! آ گیا رمضاں کا آخری جمعہ
رہائی نارِ جہنم سے ہو عطا یارب!
اللّٰھُمَّ آمین ۔

اَلْوَدَاع اَلْوَدَاع
یا شَہْرَ رَمَضَان

जुमुअ़तुल वदाअ़
मुबारक

इलाही आ गया रमज़ां का आख़िरी जुमुआ़
रिहाई नारे जहन्नम से हो अ़त़ा या रब !
اللّٰھُمَّ آمین ۔

اَلْوَدَاع اَلْوَدَاع
یا شَہْرَ رَمَضَان

اللہ

ईद मुबारक

عید مبارک

عید اُن کی نہیں جنہوں نے رنگ برنگے کپڑے پہنے، عمدہ ڈشیں کھائیں اور بن ٹھن کر سیر و تفریح کی بلکہ عید تو اُن کی ہے جنہوں نے اللہ پاک کی پکڑ سے ڈر کر توبہ کی، نیکی کی راہ اختیار کی اور گناہوں سے دور ہو گئے۔

تَقَبَّلَ اللّٰهُ مِنَّا وَمِنْكُم

یعنی: اللہ پاک آپ کی اور ہماری نیکیاں قبول فرمائے۔

عید مبارک

ईद उन की नहीं जिन्हों ने रंग बरंगे कपड़े पहने, उ़म्दा डिशें खाईं और बन ठन कर सैरो तफ़रीह़ की बल्कि ईद तो उन की है जिन्हों ने **अल्लाह** पाक की पकड़ से डर कर तौबा की, नेकी की राह इख़्तियार की और गुनाहों से दूर हो गए।

ईद मुबारक

تَقَبَّلَ اللّٰهُ مِنَّا وَمِنْكُم

या'नी : **अल्लाह** पाक आप की और हमारी नेकियां क़बूल फ़रमाए।

हफ़्तावार रिसाला मुतालआ

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ ! अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, हज़रते अल्लामा मौलाना मुहम्मद इल्यास अत्तार क़ादिरी रज़वी دامت برکاتہم العالیہ/ ख़लीफ़ए अमीरे अहले सुन्नत अलहाज अबू उसैद उ़बैद रज़ा मदनी مدظلہ العالی की जानिब से हर हफ़्ते एक रिसाला पढ़ने की तरग़ीब दी जाती है। الحمد للہ الکریم ! लाखों इस्लामी भाई और इस्लामी बहनें येह रिसाला पढ़ या सुन कर अमीरे अहले सुन्नत/ख़लीफ़ए अमीरे अहले सुन्नत की दुआओं से हिस्सा पाते हैं। येह रिसाला pdf में दा'वते इस्लामी की वेबसाइट से फ़्री डाउनलोड किया जा सकता है। सवाब की निय्यत से ख़ुद भी पढ़ें और अपने मर्हूमीन के ईसाले सवाब के लिये तक़्सीम करें।

(शो'बा : हफ़्तावार रिसाला मुतालआ)